Shodhaamrit, Vol.-2; Issue-2 (July-Dec.) 2025 : Page No.-321-325

शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अर्धवार्षिक, सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-2.0
Vol.-2; issue-2 (July-Dec.) 2025
Page No- 321-325

©2025 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

डॉ. नंदिता दत्त
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
नॉर्थ लखिमपुर विश्वविद्यालय, असम.

Corresponding Author :
डॉ. नंदिता दत्त
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
नॉर्थ लखिमपुर विश्वविद्यालय, असम.

भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं में प्रतिफलित भारतीय समाज- जीवन और आधुनिक मानव का यथार्थ

शोध सारांश : भवानी प्रसाद मिश्र जी की कविताओं में साधारण मानव जीवन का चित्रण देखा जाता है। आपने भारतीय सामान्य जनसाधारण को अपनी कविता का केंद्र बनाया है। आपकी कविताओं में ऐसा लगता है कि मानो आप भारत की आम जनता का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। हमारे टूटे हुए सपने, लड़खड़ाता भविष्य, नए-नए गांव का शहर में तब्दील होता हुआ आधा कचरा सच, भीड़ में फंसे इंसान की तन्हाई, बदलते हुए सत्य का खोखला रूप, समाज की पीड़ित जनता का दुख, व्यक्ति के मन का अंतर्द्वंद्व, राजनीतिक परिप्रेक्ष्य की दुविधा, राजनीतिक दांव- पेंच में पिसती जनता, भ्रष्टाचार, नकाबपोश जीवन आदि को आपने बहुत ही सुंदर रूप में अपनी कविताओं में चित्रित किया है। भवानी प्रसाद मिश्र जी की कविताओं में शहरी जीवन की उलझन के साथ-साथ ग्रामीण जीवन की व्यथा भी देखने को मिलती है। प्रस्तुत शोध आलेख में इन्हीं बिंदुओं पर चर्चा की जाएगी।

बीज शब्द : भवानी प्रसाद मिश्र, कविता, भारतीय, जीवन- समाज, यथार्थ, आधुनिक मानव मन, दुविधा, घुटन।

अध्ययन की सीमा: प्रस्तुत शोध पत्र भवानी प्रसाद मिश्र जी की कविताओं की सामाजिक चेतना पर आधारित है। यहां भवानी प्रसाद मिश्र जी की प्रतिनिधि कविताओं को केंद्रित करके ही आलोचना प्रस्तुत की गई हैं।

अध्ययन का उद्देश्य : प्रत्येक कार्य उद्देश्य प्रणोदित होता है। अतः प्रस्तुत शोध- आलेख का उद्देश्य कुछ प्रकार हैं -

1. भवानी प्रसाद मिश्र जी की कविताओं में चित्रित आधुनिक मानव जीवन के यथार्थ पर प्रकाश डालना।
2. उनकी कविताओं में निहित सामाजिक-राजनीतिक व्यंग्य को समझना।
3. भवानी प्रसाद मिश्र जी की कविताओं में परिलक्षित जिजीविषा एवं आशावाद की भावना पर प्रकाश डालना।
4. भवानी प्रसाद मिश्र जी कविताओं में चित्रित ग्रामीण जीवन पर प्रकाश डालना।

शोध आलेख प्रस्तुति की पद्धति: प्रस्तुत शोध पत्र को मूलतः संदर्भ एवं

सहायक ग्रंथों से पूरा किया गया है। यह मूलतः एक तथ्यात्मक शोध- आलेख है, जिसमें निम्नलिखित पद्धतियों का सहारा लिया गया हैं,

1. व्याख्यात्मक,
2. वर्णनात्मक एवं विश्लेषात्मक
3. आलोचनात्मक

भूमिका: "काव्य का स्वरूप बड़ा व्यापक है। जितना व्यापक, उतना ही सूक्ष्म भी। अतः इसे लक्षण की परिधि में बांधना अत्यंत कठिन कार्य है।"[1] आचार्य शुक्ल ने जहां कविता को हृदय की मुक्तावस्था कहा है, वही पाश्चात्य विद्वान ने इसे sponunteneous flow कहा है। जो भी हो यह सत्य है कविता हृदय की भाषा हैं जो लेखक से होकर पाठक तक की एक यात्रा बन जाती हैं। वह हर बात जो कही छिपकर रह जाता है, कवि की कलम में रोशनी पाकर गुलज़ार हो उठता है। कई बार इसका अर्थ दुरुह हो जाता हैं, जिससे इसकी आत्मा मर जाती है। परंतु आलोच्य कवि भवानी प्रसाद मिश्र जी की कविताएं सजीव, ज़िंदादिली एवं यथार्थ का प्रतीक हैं। आपकी कविताएं मन की अनुभूति का दर्शन है, जो सामाजिक चेतना से ओतप्रोत है। कवि ने समाज के प्रति रहे अपने कर्तव्य का बखूबी से पालन किया है। मिश्र जी की कविताओं में निहित मूलभूत बिंदुओं की आलोचना कुछ इस प्रकार की जा सकती है -

जिजीविषा और कवि हृदय: भवानी प्रसाद मिश्र जी की कविताओं में जीवन को जीने की इच्छा एवं हर मुश्किल परिस्थिति से लड़ने का हौसला दिखाई पड़ता हैं। आपकी कविताओं की सबसे अच्छी बात यह है कि, चाहे संकट जितना भी हो जीवन चलता रहेगा। क्योंकि यह जीवन संघर्ष से हमेशा ऊपर रहेगा। इस आशावाद के स्वर को आपने कभी नहीं छोड़ा और यह एक बहुत बड़ा प्रेरणा का स्रोत है । हम जानते हैं कि दर्द आम जनता के जीवन का सबसे अहम हिस्सा है और इसीलिए वह कहते हैं कि दर्द तो अपना है; इसे ऐसे हंसकर गले लगाना चाहिए ताकि दर्द खुद ही हैरान हो जाए। बरसों सुख के इंतजार में बैठा हुआ कोई इंसान जब दुखों के सागर में तैरता फिरता है, तब उस दुख से उसकी गहरी दोस्ती बन जाती है-

"हसो बोलो मस्ती के संग
दर्द को लगे की यह क्या ढंग
दर्द भीतर हैरान रहे
ओठ पर अपने गान रहे
मजा आ जाए अतिथि को ठीक
कि उसका ठौर- ठिकाना करो
दर्द का क्या है वह अपना
और सुख नन्हा सा सपना" [2](दर्द जब घिरे)

मनुष्य भी कमाल का जीव है, जिजीविषा इसके जीवन का धर्म है इसीलिए लाखों चोट खाकर भी जीने के लिए प्रचंड लालसा मन में रखता हैं । हजारों दुखों को झेलने के बाद भी सुख के एक कतरे के लिए मन तरसता है- "लंगड़ाते चले आ रहे हैं सुख
दौड़ते चला आ रहा है दुख
मैं अब नहीं रुकुंगा तुम्हारे लिए
मैने पंख तौल लिए हैं
और पल दो पल हवा में
उठ जाऊंगा
देखूंगा तुम्हें ऊपर से
दौड़ते लंगड़ाते तुम्हारी खैर मनाऊंगा।" [3] (सुख)

जीवन के अतरंगी पहलुओं को पार करता हुआ आदमी अपने आदर्शों का पालन करने के लिए भरसक प्रयत्न करता है । परंतु समाज की उलझने और समाज का नियम उसे अलग बना ही देता है। कोई कितना भी चाहे परंतु एक न एक दिन उसे दुनियादारी के रंग में रंगना ही पड़ता है, इसके पीछे मूल कारण आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति ही होती है-

"जी पहले कुछ दिन शर्म लगी मुझको;
पर बाद-बाद में अक्ल जागी मुझको,
जी,लोगों ने तो बेच दिए ईमान,
जी, आप न हों सुनकर ज्यादा हैरान-
मैं सोच-समझकर आखिर
अपने गीत बेचता हूँ,
जी हाँ हुजूर, मैं गीत बेचता हूँ"[4](गीत फ़रोश)

मानव मन का अंतर्द्वंद्व: मानव प्रेम से बंधा होता है, वह एक सामाजिक जीव है, बिन समाज उसका अस्तित्व अधूरा है, परंतु उसी समाज की कसौटियों से उतरने के लिए उसे बड़े पापड़ बेलने पड़ते हैं। जब मनुष्य अपनी और अपनों की अपेक्षाओं में खड़ा नहीं उतर पाता है तब उसके मन के भीतर भीषण द्वंद्व प्रारंभ होता है, कई बार व्यक्ति जुड़ते हुए भी टूटा महसूस करता है तो कई बार व्यक्ति टूटने के बाद भी पूर्णता का अनुभव कर

पाते हैं- "टूटने का सुख
बहुत प्यारी बंधनों को आज झटका लग रहा है
टूटाना निश्चित हुआ है, बड़ा खतका लग रहा है
आज आशाएँ कभी की चूर होने जा रही हैं
और कलियाँ बिन खिले कुछ धूर होने जा रही हैं
आज इच्छा मन बिना आज हर बंधन बिना
इस दिशा से उस दिशा तक छूटने का सुख"[5]
(टूटने का सुख)

राजनैतिक यथार्थ: भारत की राजनैतिक स्थिति सदैव अस्थिर रही है। स्वतंत्रता के पूर्व भी हमने अनेकों शासक देखे हैं। विशेषकर अंग्रेजी शासन के बहुत से पाठों का अंधानुकरण आज भी जारी हैं। सच कहे तो हम शायद मन से भी पराधीन हो गए हैं। जिसे मुक्त करना अत्यंत आवश्यक है। आज भी राजनीति में साधारण मानव पिसता है, कवि, साहित्यिक, पत्रकारों को खरीदने के प्रयास यहां आज भी जारी हैं। भवानी प्रसाद मिश्र जी की कविताओं में इसका स्पष्ट स्वर मिलता हैं-

"मूझसे यह कहा गया है मैं कुछ पत्र पुष्प लेकर आऊं
मूझसे यह कहा गया है मैं कुछ
स्वागत साज सजा लाऊं
मैं आज मंत्रियों की महानता का दिगदर्शन करा चलूँ
मूझसे यह कहा गया है मैं कुछ गीत लिखूं उनको गाऊ
मैं नहीं जानता जनता के प्रतिनिधि से
क्या कहकर बोलु
मैं नहीं जानता किस तखरी पर इस महानता को तोलूँ
यह दुनियादारों की बोली यदि
जी की बात बता सकती
यह उठले शब्दों की टोली यदि
गहरा दुख जता सकती
यदि दर्द समझ पाता कोई कहने की दारुण घावों का
तो चित्र खींच सकता था मैं रो उठने वाले भावों का
सब सोच रहे होंगे स्वागत के समय बात रोने की क्यों
जब हमने इतना पाया है तब खर्चा खोने की क्यों
सब मुझे क्षमा कर देना मैं कवि हूं, द्दष्टा हूं पागल हूं
मैं पीड़ा लेकर आया हूं मैं बहुत दिनों का घायल हूं"[6]
(मंत्रियों का स्वागत)

समाज का सच: न्याय व्यवस्था का खोखला स्वरुप- आज़ादी के पहले और बाद में, दोनों ही स्थितियों में देश की न्याय व्यवस्था के खोखले रूप के बारे में कवि ने अपनी कविताओं में लिखा है । भवानी प्रसाद मिश्र जी ने भी बड़े ही मार्मिक ढंग से समाज के न्यायिक सच को पाठकों के सामने रखा है, जहां विचार से पहले ही फैसला चुना दिया जाता हैं । न्याय के नाम पर जहां जज़्बातों की सौदेबाजी होती हैं- "कितनी खूबसूरत है
पुलिस की वह बड़ी मोटरगाड़ी
जिसमें लोगों को
उठा-उठाकर डाल दिया गया है
और जो चली जा रही है
हवा की चाल से
अदालत की तरफ नहीं
सीधी जेल की तरफ
देखे जरा कोई इस खूबसूरत खेल की तरफ
और इन खूबसूरत लोगों की तरफ
जो इज कोई गहरा खेल समझ रहे हैं"[7]
(कितनी खूबसूरत है)

मानव-मन की दुविधा: वर्तमान की दुनिया का सच यदि आप सभी के साथ मिलकर अन्याय कर रहे हैं तो आप अच्छे हैं। यदि आप अन्याय के खिलाफ अकेले एक विद्रोही स्वर के रूप में खड़े है तो आप देश द्रोही भी हो सकते हैं। सच कहते हैं लोग की कवि की कलम में बड़ी शक्ति होती है; जो बड़े-बड़े लोग नहीं कर पाते हैं वह कवि कर दिखाते हैं । भवानी प्रसाद मिश्र जी ने अपनी कविताओं में बड़े ही तीखे शब्दों में उन सभी देश प्रेमियों का नकाब उतारते हुऎ कहते हैं कि, हम तुम्हारे झांसे में नहीं आएंगे चाहे तुम हमें कितना ही मजबूर क्यों ना कर दो-

"वे कहते हैं आओ
इस दल में खड़े होकर गाओ
देखो यह भी तो यहाँ गा रहे हैं
गा-गाकर आसमान सिर पर उठा रहे हैं
फिर तुम्हें क्यों नहीं आते
दलदल में खड़े होकर क्यों हमारे साथ-साथ नहीं गाते
अच्छा हम समझ गए, तुम्हें जनता से प्रेम नहीं है
जनता के दुख दर्द गाना तुम्हारा नेम नहीं है"[8]
(वे कहते हैं)

कवि के मन में उलझन है परंतु उनके आदर्श पक्के हैं । उनका मन उनसे बार-बार प्रश्न कर रहा है कि उन लोगों का प्रस्ताव कहाँ तक स्वीकार्य है-

"और फिर वे मुट्ठियां बांधते हैं
और मैं सोचता हूं क्या दलदल जनता है
क्या कवि के दलदल में फैंसने से
जनता का कुछ बनता है
जनता दलदल में कहा है,
वह तो जहां चाहिए वहां है"[9] (वे कहते है)

घुटन: मनुष्य जब अपनी मर्जी से जीवन नहीं बीता पाता हैं तो उसे घुटन होती हैं। प्रत्येक कार्य जब अनिच्छा एवं दबाव में करता हैं, तब मनुष्य के भीतर एक बैचेनी उत्पन्न होती हैं और चुप्पी साधे वह केवल सांसे लेता हैं। धीरे धीरे वह हर वह रोज थोड़ा- थोड़ा मरता चला चला जाता है ।

गम ने हमारे आंसू पोंछे
भीगते चले गए
एक के बाद एक
उसके कितने अंगोछे
और अब वह
हमारे साथ-साथ
सिसक रहा है
बेचारा दुस्समय
इस दृश्य को देखकर
दबे पाँवों
खिसक रहा है"[10] (हम और हमारा ग़म)

यह एक प्रकार मानसिक कष्ट है, जो हर बार आंखों से बयान हो ही जाता है-

"जीभ की जरूरत नहीं है
क्योंकि कहकर या बोलकर
मन की बातें जाहिर करने की सूरत नहीं है
हम बोलेंगे नहीं अभी घूमेंगे-भर खुले में
लोग आँखें देखेंगे हमारी आँखें हमारी बोलेंगी
बेचैनी घोलेंगी हमारी आँखें वातावरण में
जैसे प्रकृति घोलती है प्रतिक्षण जीवन में
करोड़ों बरस के आग्रह ही मरण में
और सुगबुगाता पड़ता है उसे
संग शरारे छूटने लगते हैं
पहाड़ की छाती से फूतने लगते हैं झरने!" [11]
(आंखे बोलेगी,

नकाबपोश एवं दिखावे का जमाना : आज की दुनिया का सच यह है कि बिना नकाब पहने कोई भी इस समाज में जीवन यापन नहीं कर रहा है। प्रत्येक व्यक्ति अपने भीतर और एक व्यक्ति को लेकर घूमता है और परिस्थिति वश उसी के अनुरुप कार्य करता है । लोगों ने अब यह मान लिया है कि वर्तमान की दुनिया में यदि टिकना है तो परिस्थिति के साथ घुल मिलकर उनके रुपों को भी अपना ना होगा । या तो सहज भाषा में कहे तो आपको ट्रेंड में चलना होगा । यदि आप ट्रेंड में नहीं है तो आप आउटडेटेड कहलाएंगे, जिससे आपकी प्रतिष्ठा को ठेस पहुंचती है-

"आजकल/ बाल की खाल निकलता है जो, संभालता है सो/ दुनिया की नकेल/ अपने हाथ में /बात की बात में!/ मैने भी सोचा है,/ बात की खाल का निकालना/ उससे भी बड़ी बात/सुई की छेद में ऊंट को डालना!/ क्योंकि नकेल जब/ हाथ में रहेगी/ दुनिया बंधी मेरी/बात में रहेगी । बात का हल्ला/ गोया मालवी बेलों का पल्ला...।"[12](आजकल)

भोली भाली गांव की आम जनता(!): कुछ स्वयंभु महान एवं ज्ञानी लोगों को लगता है कि केवल वे ही ज्ञानी हैं; उन्हें ही सही और गलत का फर्क मालूम होता हैं। बाकी जनता तो मूर्ख है, उन्हें कुछ नहीं पता है। उनको चाहे आप जितना चाहो बहकाओं, बहक जाएंगे, उन्हें उनके अधिकारों से वंचित करोगे तो वंचित रह जाएंगे और कभी छू तक की आवाज नहीं करेंगे...दरअसल देखा जाए तो यह हमारे देश की स्वतंत्रता के पहले के और वर्तमान का दुखद सत्य है, परंतु जनता मूर्ख नहीं है, वह हिसाब रखती हैं। उन्हें पता हैं कि जिन्होंने देश प्रेम एवं उन्नयन के बड़े बड़े वादें किए थे, वे सभी खोखले हैं-

"मैं गवार हूं और गधा हूं
क्योंकि वचनों से अपने बंधा हूं
तुम होशियार हो और हंस हो
क्योंकि अपनी प्रतिज्ञाओं के ध्वंस हो
हमने जो कह दिया सो करते रहे
अपने कहे पर मरते रहे
तुमने जो कहा सो कभी नहीं किया
जीवन इस तरह सुख से जिया
और फिर भी मैं खुश हूं इस पर
कि मैं गवार हूं और गधा हूं
क्योंकि वचनों से अपने बंधा हूँ" [13] (गंवार)

गांव का आधा कचरा सच(!): हमारे भारत गांव का देश था, है, और हमेशा रहेगा। इस बात को आप भले

ही सरकारी आंकड़ों से कई अलग जानकारी दे, परंतु भारत की जलवायु में ग्राम की जो भीनी भीनी खुशबू है उसे आप नहीं मिटा सकते हैं। संपूर्ण भारत के 90 फ़ीसदी लोगों का जड़ गांव की जमीन से जुड़ा हुआ हैं। इतिहास गवाह है कि जब-जब ये लोग अपनी जमीन से कटे हैं तब तब उनकी मानसिक प्रगति में बाधा पहुंची हैं। परंतु आज वही गांव सबसे ज्यादा अवहेलित है, सबसे ज्यादा शोषण वही हो रहे है। धीरे-धीरे उसे शहरी रंग में रंगने की एक बहुत ही सुंदर साजिश रची जा रही है- "गांव,

इसमें झोपड़ी है, घर नहीं है,
झोपड़ी के फटकियां हैं, दर नहीं है;
धूल उड़ती है, धूएं से दम घुटा है,
मानवों के हाथ से मानव लुटा है।
रो रहे हैं शिशु कि मां चक्की लिए है,
पेट पापी के लिए पक्की किए है
फत रही है छाती"[14](गांव)

उपलब्धियां : प्रस्तुत आलोचना से निम्नलिखित उपलब्धियां प्राप्त होती हैं-

1. भवानी प्रसाद मिश्र जी की कविताओं में आधुनिक मानव मन का अंतर्द्वंद्व, घुटन, दर्द, छटपटाहट नजर आता है।
2. मानव मन की जिजीविषा और संघर्ष के प्रतिफलन ने मिश्र की कविताओं को एक नई पहचान दिलाई हैं।
3. आपकी कविताओं में राजनीतिक व्यंग्य के साथ-साथ तत्कालीन न्याय व्यवस्था पर भी व्यंग्य परिलक्षित होता है।
4. मिश्र जी की कविताओं में तथाकथित सभ्य लोगों के नकाबपोश जीवन पर भी व्यंग परिलक्षित होता हैं।
5. भारतीय गांव की स्थिति एवं गांव के जीवन की मार्मिक छवि को मिश्र जी सुंदर रुप से आंका है।

निष्कर्ष : वर्तमान समय की कविता पर जहां यह आरोप लगाया जाता है कि यह दिन- व- दिन दुरुह होती जा रही हैं, ऐसी स्थिति में भवानी प्रसाद मिश्र जी की कविताएं आशा की किरण के समान पाठकों के सामने आती हैं। उनकी कविताएं सरल होने के साथ-साथ दिल को छू जाने की क्षमता रखती हैं। उनकी कविता को चमकने के लिए अत्यधिक अलंकार अथवा प्रतीक आदि की आवश्यकता नहीं है। उनकी वाणी में ही इतनी पर्याप्त शक्ति है कि वे अपने मनोभावों को समाज तक प्रेषित कर सकते हैं, और जो बिना किसी रुकावट के पाठकों के हृदय तक पहुंच भी जाती हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि भवानी प्रसाद मिश्र जी की कविताएं जितनी सरल है उतनी भाव उत्पादक भी है, आपकी कविताएं आज भी प्रासंगिक है और भारतीय समाज जीवन के यथार्थ तथा आधुनिक मानव मन को भली भांति प्रतिफलित करने की पूर्ण क्षमता रखती हैं।

सहायक ग्रंथ- सूची :

1. मिश्र, डॉ. भगीरथ, काव्यशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, संस्करण 2007.
2. मिश्र, भवानी प्रसाद, प्रतिनिधि कविताएं , राजकमल प्रकाशन, छठा संस्करण, 2025.
3. संपादक, डॉ. नगेंद्र एवं हरदयाल, हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरवेक्स, संस्करण 2016.

संदर्भ सूची :

1. मिश्र, डॉ. भगीरथ, काव्यशास्त्र,विश्वविद्यालय प्रकाशन, संस्करण 2007, पृष्ठ सं- 3.
2. मिश्र, भवानी प्रसाद, प्रतिनिधि कविताएं , राजकमल प्रकाशन, छठा संस्करण, 2025, पृष्ठ सं- 42.
3. वही, पृष्ठ सं. 74.
4. वही, पृष्ठ सं. 45.
5. वही, पृष्ठ सं. 25.
6. वही, पृष्ठ सं.17.
7. वही, पृष्ठ सं.107/108.
8. वही, पृष्ठ सं.49.
9. वही, पृष्ठ सं.50.
10. वही, पृष्ठ सं.112.
11. वही, पृष्ठ सं.90/91.
12. वही, पृष्ठ सं.142.
13. वही, पृष्ठ सं.68.
14. वही, पृष्ठ सं.19.

•